MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:11 APRIL 2026

[कार्यक्रम] एमसीयू में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान का आयोजन, वक्ताओं ने रखे अपने विचार

आज पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वाकांक्षाएं हावी हैं : अच्युतानंद

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

आजादी से पहले और बाद की पत्रकारिता के मूल्यों में व्यापक बदलाव आए हैं। आज पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वकांक्षाएं हावी हैं। पूर्व की पत्रकारिता में नैतिक स्तर उच्च कोटि का था। वह दौर और उस दौर के लोग अद्भुत थे।

उक्त बात वरिष्ठ पत्रकार व एमसीयू के पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र ने कही। वे माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में बतौर अतिथि वक्ता बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ने उसी दौरान देश की राजनीति, साहित्य, संस्कृति और सभ्यता को अपनी तेजस्वी पत्रकारिता से ऊपर उठाने का काम किया। वे केवल एक पत्रकार ही नहीं बल्कि एक योद्धा और विलक्षण संत थे। एक ऐसे योद्धा संपादक जिन्हें सब प्यार करते थे और जिनकी बातें भी सब मानते थे।

शब्द अगर सत्य से उत्पन्न हो तो तोप से ज्यादा असरकारी : श्रीवास्तव

माधवराव सप्रे व महावीर प्रसाद द्विवेदी से लें प्रेरणा

श्री मिश्र ने बताया कि उस दौर का कोई ऐसा बड़ा नेता साहित्यकार और पत्रकार नहीं होगा जो उनसे मिलने उनके छोटे से गांव बावाई और कर्मस्थली खंडवा न गया हो। उनके अनुसार माखनलाल जी ने स्वयं तो आदर्श पत्रकारिता की ही बल्कि उस समय के कई पत्रकार-संपादकों ने भी उनकी प्रेरणा और सानिध्य से देश की राजनीति, भाषा और साहित्य के उत्थान का काम किया। उन्होंने श्री चतुर्वेदी के समकालीन माधवराव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेदी, कल्याण पत्रिका के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार का भी सम्मान से जिक्र किया और सभागार में उपस्थित नवागत पत्रकारों को उनके बारे में पढ़ने व प्रेरणा लेने के लिए कहा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ता।

विकल्प समाचार पत्र का विमोचन... पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों द्वारा तैयार विकल्प समाचार पत्र का विमोचन भी हुआ। सीएसआर के तहत एमपी आनलाइन ने विश्वविद्यालय को एक ई-रिक्शा भेंट किया। इसका शुभारंभ भी अतिथियों ने किया। आभार कुलसचिव पी. शशिकला ने माना और सुंदर संचालन संस्कृतिकर्मी विनय उपाध्याय ने किया। विश्वविद्यालय के समस्त विभागों के विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर, विद्यार्थी, कर्मचारी और अधिकारी उपस्थित रहें। शहर के गणमान्य अतिथि भी इस आयोजन में शामिल हुए।

पत्रकारिता पढ़ने और पढ़ाने की सख्त जरुरत

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे लेखक एवं विचारक मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि माखनलालजी ने पत्रकारिता की विद्यापीठ की परिकल्पना की थीं। जिस दौर में पत्रकारिता को शस्त्र की तरह इस्तेमाल किया जाने लगा था उस समय उन्होंने उसे शास्त्र माना और इस बात पर जोर दिया कि पत्रकारिता पढ़ने और पढ़ाने की सख्त जरुरत है।

जिस परिसर का सपना जिसने देखा वह आज हमारे बीच

आरंभ में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत उद्बोधन दिया कहा कि आज जिस परिसर में हम बैठे हैं उसका सपना जिन आंखों ने देखा था वे आज हमारे बीच हैं। श्री मिश्र की इस विश्वविद्यालय के विकास में अहम् भूमिका है। हम विश्वास दिलाते हैं कि इस विरासत को हम संहेज कर रखेंगे। साढ़े तीन दशक की यात्रा में जिन ऊंचाई को हम छू रहे हैं वह परम्परा मिश्र जी ने आरंभ की है।

एमसीयू में शुरू हुआ जनसंपर्क अधिकारियों व सोशल मीडिया हैंडलर्स का दो दिवसीय प्रशिक्षण

निरंतर सीखते रहना ही सफलता की कुंजीः वाधवा

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

एमसीयू में जनसंपर्क अधिकारियों एवं सोशल मीडिया हैंडलर्स के लिए दो दिवसीय दक्षता उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में जनसंपर्क विभाग के अपर संचालक जीएस वाधवा ने कहा कि जनसंपर्क के क्षेत्र में सफलता के लिए निरंतर सीखना अत्यंत आवश्यक है। फील्ड में मिलने वाले अनुभव अधिकारियों को नई परिस्थितियों के अनुरूप कार्य करने में सक्षम बनाते हैं। उन्होंने कहा कि कार्यों का नियमित मूल्यांकन बेहतर योजनाएं बनाने में सहायक होता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलगुरू विजय मनोहर तिवारी ने जनसंपर्क के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अधिकारियों को मीडिया का सकारात्मक उपयोग करना आना चाहिए। उन्होंने कहा कि अच्छे विचारों को मीडिया के माध्यम से साझा कर सकारात्मक वातावरण बनाया जा सकता है। साथ ही उन्होंने जनसंपर्क अधिकारियों के लिए संवेदनशीलता, विनम्रता और जनसंपर्क कौशल को जरूरी बताया। कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए जनसंपर्क अधिकारियों के साथ अपर संचालक गणेश कुमार जायसवाल, प्रभारी अपर संचालक संजय जैन सहित विश्वविद्यालय की कुलसचिव प्रो. पी. शशिकला मुख्य रूप से मौजूद थे। प्रशिक्षण के दूसरे दिन आज शनिवार यहां जनसंपर्क नीतियों और उनके व्यवहारिक पहलुओं पर चर्चा की जाएगी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि।

तकनीकी सत्र में विशेषज्ञों का मार्गदर्शन

प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ पत्रकार कमलेश माहेश्वरी ने डिजिटल तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर बताया कि एआई टूल्स जनसंपर्क कार्यों को अधिक प्रभावी और सरल बना सकते हैं। दूसरे सत्र में ई-ऑफिस, ई-फाइलिंग और डिजिटल नवाचारों पर प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें दस्तावेज प्रबंधन को सरल बनाने पर जोर दिया गया। तीसरे सत्र में पूर्व सूचना आयुक्त आत्मदीप ने सूचना का अधिकार, प्रेस कानून और पारदर्शिता के महत्व को रेखांकित किया। वहीं अंतिम सत्र में उप-संचालक सुनील वर्मा और वरिष्ठ पत्रकार सुनील शुक्ला ने जनसंपर्कमें सोशल मीडिया के प्रभावी और जिम्मेदार उपयोग पर प्रकाश डाला।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH'11 APRIL.2026

एमसीयू में माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान

पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने राजनीति, साहित्य और संस्कृति को दी नई ऊंचाई

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में पं. माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें पत्रकारिता के बदलते स्वरूप, मूल्यों और संस्थागत साहस पर गंभीर चर्चा हुई। मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि आजादी से पहले और बाद की पत्रकारिता में बड़ा बदलाव आया है। उन्होंने पंडित माखनलाल चतुर्वेदी को तेजस्वी पत्रकार, योद्धा और संत बताते हुए कहा कि उन्होंने राजनीति, साहित्य और संस्कृति को नई ऊंचाई दी। उस दौर में बड़े नेता और साहित्यकार उनके गांव बावई और कर्मस्थली खंडवा तक पहुंचते थे। उन्होंने छात्रों को माधवराव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हनुमान प्रसाद पोद्दार जैसे व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने को कहा। लेखक मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि पत्रकारिता में संस्थागत साहस जरूरी है। जब शब्द सत्य से उत्पन्न होते हैं तो वे तोप से भी अधिक प्रभावशाली होते हैं।

विद्यार्थियों ने किया विकल्प समाचार का विमोचन

कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि विश्वविद्यालय की वर्तमान उपलब्धियां पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र की दूरदर्शिता का परिणाम हैं। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा तैयार 'विकल्प' समाचार पत्र का विमोचन भी किया गया। साथ ही एमपी ऑनलाइन द्वारा सीएसआर के तहत विश्वविद्यालय को ई-रिक्शा भेंट किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थी और प्राध्यापक उपस्थित रहे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PATRIKA'11 APRIL.2026

माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में गूंजा पत्रकारिता का स्वर्णिम इतिहास

सत्य लेखन ही पत्रकारिता का मूल सिद्धांत : पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद

विवि में आयोजित कार्यक्रम में माखनलाल चतुर्वेदी पर अपने विचार व्यक्त करते पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र व अन्य। ● सौ: आयोजक

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः आजादी से पहले और बाद की पत्रकारिता के मूल्यों में व्यापक बदलाव आए हैं। आज पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वकांक्षाएं हावी हैं। पूर्व की पत्रकारिता में नैतिक स्तर उच्च कोटि का था, यह कहना था पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र का। मौका था माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को पं. माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान के आयोजन का।

कार्यक्रम का विषय था 'माखनलाल जी का युग एवं उनकी पत्रकारिता', जिसमें उनके साहित्यिक और पत्रकारिता योगदान पर विस्तार से विचार व्यक्त किए। व्याख्यान का आयोजन गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र ने माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व और कृतित्व को याद करते हुए कहा कि वे केवल पत्रकार या साहित्यकार नहीं थे, बल्कि एक संघर्षशील योद्धा भी थे।

गांधी युग की पत्रकारिता का उल्लेख : मिश्र ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि वर्ष 1920 के आसपास का समय भारतीय पत्रकारिता में गांधी युग के रूप में जाना जाता है। उस दौर में पत्रकारिता समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम थी। उन्होंने माखनलाल चतुर्वेदी और महात्मा गांधी के बीच संवाद का भी उल्लेख किया, जिसमें सत्य और नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया गया। उन्होंने गणेश शंकर विद्यार्थी और पंडित हनुमान प्रसाद पोद्दार जैसे महान संपादकों का भी स्मरण किया। पोद्दार के संदर्भ में उन्होंने बताया कि जब वे धार्मिक पत्रिका का प्रकाशन कर रहे थे, तब गांधी ने उन्हें सलाह दी थी कि पत्रिका में न तो विज्ञापन प्रकाशित किए जाएं और न ही पुस्तकों की समीक्षा। यही कारण है कि 'कल्याण' पत्रिका में आज तक विज्ञापन या समीक्षा प्रकाशित नहीं होती।

संपादकों की बदलती भूमिका पर जताई चिंता

अच्युतानंद मिश्र ने 1920 से 1950 तक के संपादकों की सराहना करते हुए कहा कि उस समय संपादक समाज के मार्गदर्शक होते थे। हालांकि, उन्होंने यह भी चिंता व्यक्त की कि बाद के वर्षों में संपादकीय स्तर में गिरावट आई, जिसका एक कारण यह रहा कि संस्थानों के मालिक स्वयं संपादक बनने लगे।

समाचार पत्र को बताया शिक्षक के समानः राज्य निर्वाचन आयुक्त मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान पत्रकारिता के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने कहा कि सत्य से निकला शब्द तोप से भी अधिक प्रभावशाली होता है और माखनलाल हर बार जेल से और अधिक सशक्त होकर लौटे। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत भाषण में कहा कि जिस परिसर का सपना देखा गया था, वह आज साकार है। संचालन विनय उपाध्याय ने किया, आभार कुलसचिव प्रो. पी. शशिकला ने व्यक्त किया। व्याख्यान में बड़ी संख्या में विद्यार्थी, प्राध्यापक और पत्रकार शामिल हुए। इस दौरान विद्यार्थियों द्वारा तैयार समाचार पत्र का विमोचन किया गया। एमपी आनलाइन ने विश्वविद्यालय को एक ई-रिक्शा भेंट किया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA'11 APRIL.2026

मूल्यों से ही मजबूत होती है कलम : अच्युतानंद

भोपाल, 10 अप्रैल. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में आयोजित स्मृति व्याख्यान कार्यक्रम में शुक्रवार को वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति अच्युतानंद मिश्र ने पत्रकारिता के बदलते स्वरूप और उसके मूल्यों पर गहन विचार साझा किए. कार्यक्रम का विषय 'माखनलाल जी का युग एवं उनकी पत्रकारिता' रहा, जिसमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं एवं शिक्षक उपस्थित रहे. कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में अच्युतानंद मिश्र के साथ अध्यक्ष के रूप में मनोज श्रीवास्तव (आईएएस) तथा सूत्रधार के रूप में विनय उपाध्याय भी शामिल हुए. सभी ने अपने विचारों के माध्यम से पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला. अपने उद्बोधन में मिश्र ने माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व को एक योद्धा और संत के रूप में वर्णित करते हुए कहा कि वे निडर पत्रकार थे, जो सत्य को निर्भीकता से सामने रखते थे. उन्होंने बताया कि 1920 से 1950 तक का कालखंड भारतीय पत्रकारिता का स्वर्णिम दौर था, जब संपादकों की प्रतिबद्धता अटूट हुआ करती थी.

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA'11 APRIL.2026

एमसीयू में पं. माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान आयोजित

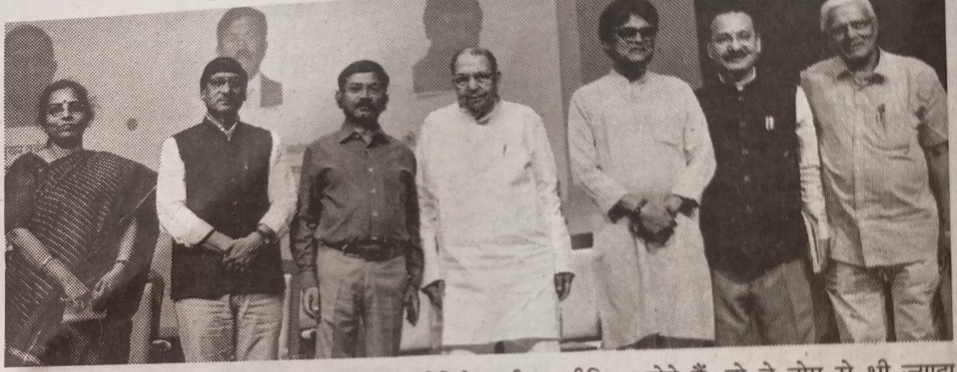

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल : माखनलाल चतुर्वेदी के योगदान को सम्मानित करने के लिए एमसीयू में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार और संपादक अच्युतानंद मिश्र ने पत्रकारिता में बदलावों पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि आजादी से पहले और बाद की पत्रकारिता में काफी अंतर आया है, जहां अब पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वकांक्षाएं ज्यादा हावी हो गई हैं। श्री मिश्र ने माखनलाल चतुर्वेदी को एक विलक्षण संत और पत्रकार बताया, जिन्होंने देश की राजनीति, साहित्य और संस्कृति को अपनी तेजस्वी पत्रकारिता से ऊपर उठाया। उन्होंने माखनलाल जी की प्रेरणा और सानिध्य में कई पत्रकार-संपादकों द्वारा देश की राजनीति, भाषा और साहित्य के उत्थान में योगदान की चर्चा की।

कार्यक्रम में प्रख्यात लेखक एवं विचारक मनोज श्रीवास्तव ने माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता को शास्त्र की तरह प्रस्तुत किया और कहा कि पत्रकारिता को पढ़ने और पढ़ाने की सख्त आवश्यकता है। उन्होंने माखनलाल जी के शब्दों के प्रभाव की ओर इशारा करते हुए कहा कि जब शब्द सत्य से उत्पन्न होते हैं, तो वे तोप से भी ज्यादा असरकारी होते हैं।कार्यक्रम के दौरान कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत उद्बोधन दिया और अच्युतानंद मिश्र के योगदान को सराहा। इस अवसर पर पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों द्वारा तैयार विकल्प समाचार पत्र का विमोचन भी हुआ। ऑनलाइन ने विश्वविद्यालय को एक ई-रिक्शा भी भेंट किया, जिसका शुभारंभ अतिथियों ने किया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'DANIK NAIDUNIYA'11 APRIL.2026

पत्रकार ही नहीं योद्धा और विलक्षण संत थे दादा माखनलाल : मिश्र

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

आजादी से पहले और बाद की पत्रकारिता के मूल्यों में व्यापक बदलाव आए हैं। आज पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वकांक्षाएं हावी हैं। पूर्व की पत्रकारिता में नैतिक स्तर उच्च कोटि का था। वह दौर और उस दौर के लोग अद्भुत थे। पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने उसी दौरान देश की राजनीति, साहित्य, संस्कृति और सभ्यता को अपनी तेजस्वी पत्रकारिता से ऊपर उठाने का काम किया। वे केवल एक पत्रकार ही नहीं बल्कि एक योद्धा और विलक्षण संत थे। एक ऐसे योद्धा संपादक जिन्हें सब प्यार करते थे और जिनकी बातें भी सब मानते थे। यह कहना है वरिष्ठ पत्रकार और संपादक तथा माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि के पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र का। वे विवि में शुक्रवार को माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में बतौर अतिथि वक्ता बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता लेखक एवं विचारक मनोज श्रीवास्तव ने की। अतिथि वक्ता अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि उस दौर का कोई ऐसा बड़ा नेता, साहित्यकार या पत्रकार नहीं होगा जो उनसे मिलने उनके छोटे से गांव बाबई और कर्मस्थली खंडवा न गया हो। उनके अनुसार माखनलाल जी ने स्वयं तो आदर्श पत्रकारिता की ही बल्कि उस समय के कई पत्रकार-संपादकों ने भी उनकी प्रेरणा और सान्निध्य से देश की राजनीति, भाषा और साहित्य के उत्थान का काम किया। उन्होंने दादा के समकालीन माधवराव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेदी, कल्याण पत्रिका के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार का भी सम्मान से जिक्र किया और सभागार में उपस्थित नवागत पत्रकारों को उनके बारे में पढने व प्रेरणा लेने के लिए कहा।

कविता 'पुष्प की अभिलाषा' का मर्म समझना होगा

'पुष्प की अभिलाषा' कविता का मर्म समझने का आग्रह करते हुए भावुकता से कहा कि सोचिए उस कल्पना के बारे में जो उस पथ पर फेंक देने का आग्रह करती है जहां वीर सैनिक मातृभूमि पर अपना शीश चढ़ाने जा रहे हैं आज वह कविता इसीलिए कालजयी है क्योंकि देश के प्रति गहनभाव से उपजी है। 'कल्याण' पत्रिका का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि आज भी वह पत्रिका बिना विज्ञापन और पुस्तक समीक्षा के निकलती है। अपनी बात कितनी प्रखरता से रखी जा सकती है वह हम उस युग के कलम के सिपाहियों से सीख सकते हैं। माखनलाल जी सत्य और न्याय के प्रबल पक्षधर थे।

गांधी और तिलक दोनों विचारधाराओं को अपनाया

अध्यक्षीय उद्बोधन में मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि माखनलाल जी ने पत्रकारिता की विद्यापीठ की परिकल्पना की थीं। जिस दौर में पत्रकारिता को शस्त्र की तरह इस्तेमाल किया जाने लगा था उस समय उन्होंने उसे शास्त्र माना और इस बात पर जोर दिया कि पत्रकारिता पढने और पढ़ाने की सख्त जरुरत है। वे उस युग के प्रखर और दमदार पत्रकार बने जब अखबार छापना ही देशद्रोह माना जाता था। भारत की भाषा, चिंतन और अस्मिता को लेकर वे सजग थे। तिलक और गांधी की दो धाराओं से गुजरते हुए हमें माखनलाल जी को समझना होगा। उन्होंने तिलक से तेज, ओज और आक्रामकता ली जबकि गांधी से विनम्रता, नैतिकता और सौजन्यता ग्रहण की। वे इन दोनों धाराओं के संगम पर खड़े थे। उन्होंने कहा कि शब्द जब सत्य से उत्पन्न होता है तब वह तोप से भी ज्यादा असरकारी होता है। माखनलाल जी जब-जब जेल से आए तब-तब और अधिक धारदार होकर आए जैसे सोना तपकर निखरता है। अंग्रेज सरकार की उस समय की सागर जिले में कसाई खाने की परियोजना माखनलाल जी के तीखे संपादकीय के प्रभाव से बंद हुई। आरंभ में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत उद्बोधन दिया और मिश्र जी के सम्मान में कहा कि आज जिस परिसर में हम बैठे हैं उसका सपना जिन आंखों ने देखा था वे आज हमारे बीच हैं। श्री मिश्र जी की इस विश्वविद्यालय के विकास में अहम्भूमिका है। हम विश्वास दिलाते हैं कि इस विरासत को हम सहेज कर रखेंगे। साढ़े तीन दशक की यात्रा में जिन ऊंचाई को हम छू रहे हैं वह परम्परा मिश्र जी ने आरंभ की है।

'विकल्प' का हुआ विमोचन

इस अवसर पर पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों द्वारा तैयार विकल्प समाचार पत्र का विमोचन भी हुआ। सीएसआर के तहत एमपी ऑनलाइन ने विश्वविद्यालय को एक ई-रिक्शा भेंट किया। इसका शुभारंभ भी अतिथियों ने किया। आभार कुलसचिव पी. शशिकला ने माना तथा संचालन विनय उपाध्याय ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त विभागों के विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर, विद्यार्थी, कर्मचारी और अधिकारी उपस्थित रहें। शहर के गणमान्य अतिथि भी इस आयोजन में शामिल हुए।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH JYOTI'11 APRIL.2026

पत्रकारिता के मूल्यों और साहस पर मंथन

जागरण, भोपाल। एमसीयू में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की स्मृति में आयोजित व्याख्यान में पत्रकारिता के बदलते स्वरूप, उसके मूल्यों और संस्थागत साहस पर गंभीर चर्चा की गई। मुख्य वक्ता अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि आजादी से पहले की पत्रकारिता लोकहित पर आधारित थी, जबकि वर्तमान दौर में व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं अधिक प्रभावी नजर आती हैं। उन्होंने पंडित माखनलाल चतुर्वेदी को तेजस्वी पत्रकार, योद्धा और संत व्यक्तित्व बताते हुए कहा कि उनके समय में बड़े नेता और साहित्यकार उनके गांव बावई और कर्मस्थली खंडवा तक पहुंचते थे। साथ ही माधवराव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हनुमान प्रसाद पोद्दार जैसे समकालीनों से प्रेरणा लेने की बात कही। कार्यक्रम में लेखक मनोज श्रीवास्तव ने पत्रकारिता में संस्थागत साहस की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि सत्य से निकले शब्द तोप से भी अधिक प्रभावशाली होते हैं। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों का श्रेय पूर्व कुलगुरु की दूरदर्शिता को दिया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'DANIK JAGRAN'11 APRIL.2026

एमसीयू में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान आयोजित

आज पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वकांक्षाएं हावी हैं: अच्युतानंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

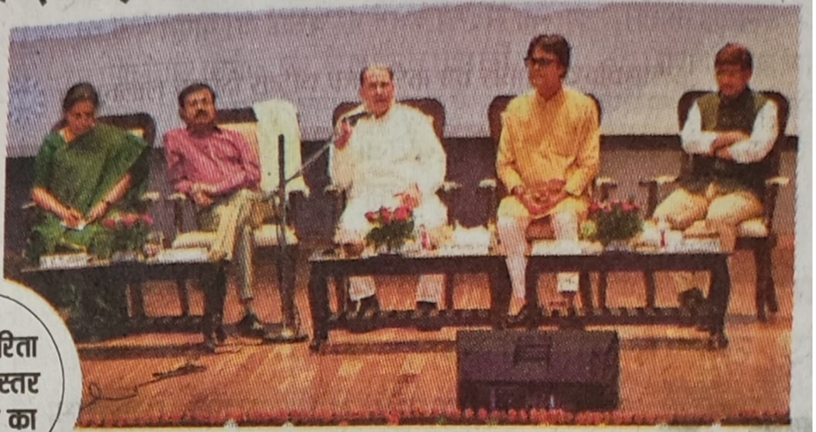

आजादी से पहले और बाद की पत्रकारिता के मूल्यों में व्यापक बदलाव आए हैं। आज पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वकांक्षाएं हावी हैं। पूर्व की पत्रकारिता में नैतिक स्तर उच्च कोटि का था। वह दौर और उस दौर के लोग अद्भुत थे। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ने उसी दौरान देश की राजनीति, साहित्य, संस्कृति और सभ्यता को अपनी तेजस्वी पत्रकारिता से ऊपर उठाने का काम किया। उक्त बात वरिष्ठ पत्रकार और संपादक तथा एमसीयू के पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र ने कही। वे माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में बतौर अतिथि वक्ता बोल रहे थे।

पूर्व की पत्रकारिता में नैतिक स्तर उच्च कोटि का था

पुष्प की अभिलाषा कविता का मर्म समझिए

'पुष्प की अभिलाषा' कविता का मर्म समझने का आग्रह करते हुए भावुकता से कहा कि सोचिए उस कल्पना के बारे में जो उस पथ पर फेंक देने का आग्रह करती है जहाँ वीर सैनिक मातृभूमि पर अपना शीश चढ़ाने जा रहे है।

पत्रकारिता को शस्त्र की बजाय शास्त्र माना

प्रख्यात लेखक मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि जिस दौर में पत्रकारिता को शस्त्र की तरह इस्तेमाल किया जाने लगा था उस समय उन्होंने उसे शास्त्र माना और इस बात पर जोर दिया कि पत्रकारिता पढ़ने और पढ़ाने की सख्त जरूरत है।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'HARIBHOOMI'11 APRIL.2026

एमसीयू | पंडित माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान

माखनलाल जी सिर्फ पत्रकार नहीं योद्धा और विलक्षण संत थे: मिश्र

सिटी रिपोर्टर • भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में शुक्रवार को आयोजित पंडित माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में विवि के पूर्व कुलपति और वरिष्ठ पत्रकार अच्युतानंद मिश्र ने पत्रकारिता के बदलते मूल्यों पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने स्पष्ट किया कि आजादी के पहले और बाद की पत्रकारिता में व्यापक बदलाव आए हैं। आज की पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वाकांक्षाएं हावी हो गई हैं। पहले की पत्रकारिता का नैतिक स्तर अत्यंत उच्च कोटि का था। पूर्व कुलपति मिश्र ने पंडित माखनलाल चतुर्वेदी को याद करते हुए उन्हें केवल एक पत्रकार नहीं, बल्कि एक योद्धा और विलक्षण संत बताया। नए पत्रकारों का मार्गदर्शन करते हुए मिश्र ने उनसे माधवराव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेदी औ हनुमान प्रसाद पोद्दार जैसे समकालीन दिग्गजों के बारे में पढ़ने और प्रेरणा लेने का आग्रह किया।

माखनलाल जी की सोच से बना एमसीयू

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात लेखक मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि माखनलाल जी ने पत्रकारिता की विद्यापीठ की परिकल्पना की थी। जिस दौर में पत्रकारिता को शस्त्र की तरह इस्तेमाल किया जाने लगा था, उस समय उन्होंने उसे शास्त्र माना। उन्होंने कार्यक्रम में वर्तमान कुलपति विजय मनोहर तिवारी ने भी पूर्व कुलपति अच्युतानंद मिश्र के अद्वितीय योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने सम्मानपूर्वक कहा कि विश्वविद्यालय आज जिस नए परिसर में है, उसका सपना श्री मिश्र ने ही देखा था। उनके द्वारा आरंभ की गई परंपराओं के कारण ही एमसीयू आज इन ऊंचाइयों को छू रहा है।

पत्रकारिता में महत्वाकांक्षाएं हावी: मिश्र

एमसीयू में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान आयोजित

पीपुल्स संवाददाता ● भोपाल
editor@peoplessamachar.co.in

आजादी से पहले और बाद की पत्रकारिता के मूल्यों में व्यापक बदलाव आए हैं। आज पत्रकारिता में महत्वकांक्षाएं लोकहित की तुलना में हावी हैं। पहले नैतिक स्तर उच्च कोटि का था। यह बात माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति में व्याख्यान में अतिथि वक्ता एमसीयू के पूर्व कुलगुरु व वरिष्ठ पत्रकार अच्युतानंद मिश्र ने कही। उन्होंने कहा कि पंडित चतुर्वेदी ने तब देश की राजनीति, साहित्य, संस्कृति व सभ्यता को तेजस्वी पत्रकारिता से ऊपर उठाया। वे केवल पत्रकार ही नहीं, बल्कि योद्धा और विलक्षण संत थे। लेखक एवं पूर्व आईएएस

माखनलाल विवि में कार्यक्रम में मौजूद अतिथि।

मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि कि माखनलाल ने पत्रकारिता की विद्यापीठ की परिकल्पना की थी। जिस दौर में पत्रकारिता को शस्त्र की तरह इस्तेमाल किया जाने लगा था, तब उन्होंने उसे शास्त्र माना। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पत्रकारिता पढ़ने और पढ़ाने की सख्त जरूरत है। कार्यक्रम का शुभारंभ कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी के स्वागत उद्बोधन से हुआ। कुलसचिव पी. शशिकला ने आभार माना और संचालन विनय उपाध्याय ने किया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PEOPALS SAMACHAR'12 APRIL.2026